بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 09.12.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय ख़लीफ़ा-ए-राशिद सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 9 दिसम्बर 2022, स्थान मस्जिद मुबारक

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- पिछले ख़ुत्बः में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ अवतरण हज़रत अबू बकर रज़ी के बारे में पेश किए थे, इस बारे में आप अलै. के कुछ और वक्तव्य पेश करता हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि निःसन्देह अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. तथा उमर फ़ारूक़ रज़ी. उस यात्री दल के मुख्या थे जिसने अल्लाह के लिए बुलन्द ऊचाईयों को पार कर लिया तथा उनहोंने सभ्य एवं असभ्य को हक़ की दावत दी, यहाँ तक कि उनकी यह दावत दूर सूदूर क्षेत्रों तक फैल गई और इन दोनों की ख़िलाफ़त में बहुल संख्या में इस्लाम के फल रखे गए तथा कई प्रकार की सफलताओं तथा कामरानियों के साथ सम्पूर्ण सुगन्ध से सुगन्धित की गई और इस्लाम हज़रत अबू बकर रज़ी. के ज़माने में विभिन्न प्रकार के फ़ितनों की आग से ग्रस्त था एवं सम्भावना थी कि खुली खुली विनाश कारी गतिविधियाँ उसकी जमाअत पर घटित हों तथा उसके लूट लेने पर गर्व के नारे लगाएँ। अतः ठीक उसी समय हज़रत अबू बकर रज़ी. क सत्यात्मा होने के कारण रब्बे जलील इस्लाम की सहायता को आ पहुंचा तथा गहरे कुएँ से उसका प्यारा धन निकाला। इस प्रकार इस्लाम विकट दशा के गहरे खड से निकल कर उत्तम अवस्था की ओर लौट आया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- वास्तविकता यह है कि हज़रत अबू बकर रज़ी. के सद्गुण सूरज की भांति चमकदार हैं और जिसने इंकार किया, उसने झूठ बोला तथा विनाश एवं शैतान से जा मिला। जिन लोगों पर हज़रत अबू बकर रज़ी. के उच्च स्तर सन्देह पूर्ण रहे ऐसे लोग जानते बूझते दोषी हैं तथा उन्हाने अधिक पानी (हज़रत अबू बकर रज़ी. के अस्तित्व का वरदान) को कम जाना तथा ऐसे व्यक्ति का अनादर किया जो प्रथम स्तर का आदरणीय एवं सम्मान योगय था। हज़रत अबू बकर रज़ी. द्वारा मोमिनों के लिए सदैव भलाई एवं उद्धार ही प्रकट हुआ। वह व्यक्ति जिसने दुनिया से केवल उतना ही अंश लिया जितना उसकी आवश्यताओं के लिए पर्याप्त था, फिर कैसे समझा जा सकता है कि उसने रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संतान पर अत्याचार जारी रखा होगा। अल्लाह सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ी. पर रहमतें नाज़िल फ़रमाए कि आप रज़ी. ने इस्लाम को जीवित किया तथा झूठों की हत्या की तथा क़यामत तक के लिए अपनी नेकियों का लाभ जारी कर दिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह सिद्दीक़े अकबर रज़ी. पर अपनी कृपाएं नाज़िल फ़रमाए कि आप रज़ी. ने इस्लाम को ज़िन्दा किया और झूठों का वध किया तथा क़यामत तक के लिए अपनी नेकियों का फ़ैज़ जारी कर दिया। आप रज़ी. अत्यंत आंस् बहान के साथ साथ अल्लाह से जुड़ने वाले थे तथा रोना धोना एवं अल्लाह के समक्ष गिरे रहना, उसके द्वार पर रोना एवं विनयता के साथ झुके रहना तथा उसकी चौखट को मज़बूती के साथ थामे रखना, आप रज़ी. की आदत में से था। आप सजदे के समय दुआ में पूरा ज़ोर लगाते तथा तिलावत करते समय रोते थे। हज़रत अबू बकर रज़ी. निःसन्देह इस्लाम तथा नबियों के लिए गर्व हैं। आप रज़ी. की दिव्य प्रकृति भलाई से परिपूर्ण अस्तित्व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिव्य प्रकृति के निकटतम थी। आप रज़ी. नबुव्वत की सुगन्धों को ग्रहण करने के लिए तत्पर लोगों में से प्रथम थे। आप रज़ी. उन लोगों में सर्वप्रथम थे जिन्होंने मैल से भरी चादरों को पवित्र एवं शुद्ध पोशाकों में बदल दिया तथा नबियों की अधिकांश विशेषताओं में नबियों के समरूप थे। हम क़ुर्आन करीम में आप रज़ी. के वर्णन के अतिरिक्त किसी अन्य सहाबी का वर्णन, सिवाए धारणा करने वालों की सुदृढ़ तथा निश्चित धारणा के रूप में उपलब्ध नहीं पाते तथा धारणा वह चीज़ है जो सत्य की तुलना में कोई मूल्य नहों रखती तथा न ही वह सत्यगामिया की सन्तुष्टि कर सकती है तथा जिसने आप रज़ी. से दुश्मनी की तो ऐसे व्यक्ति तथा सत्य की बीच एक ऐसा बन्द द्वार स्थित है जो सिद्दीक़ों के सरदार की ओर वापस पलटने के बिना नहीं खुलेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. की आत्मा में सत्य एवं निष्ठा, दृढ़ संकल निश्चय तथा तक़्वा पर चलने की प्रवृत्ति दाख़िल थी। चाहे पूरा विश्व इस्लाम स विमुख हो जाए, आप रज़ी. उसकी चिंता न करते और न पीछे हटते बल्कि सदैव अपना क़दम आगे ही आगे बढ़ाते गए तथा इसी कारण से अल्लाह ने नबियों के तुरन्त बाद सिद्दीक़ों के वर्णन को रखा और फ़रमाया- فَأُولٰئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصّٰلِحِيْنَ और इस आयत में सिद्दीक़े अकबर रज़ी. और आप रज़ी. की दूसरों पर प्रमुखता के संकेत हैं, क्यूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों में से आप रज़ी. के अतिरिक्त किसी सहाबी का नाम सिद्दीक़ नहीं रखा ताकि वह आप रज़ी. के स्तर तथा महामान्य महानता को प्रकट करे। इस आयत में सालिकों (सत्यगामियों) के लिए कमाल के स्तर तथा उनकी क्षमता रखने वालों की ओर महान संकेत है, और जब हमने इस आयत पर विचार किया तो यह भेद खुला कि यह आयत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. के कमालात पर सबसे बड़ी गवाह है तथा इसमें गहरा भेद है जो हर उस व्यक्ति पर खुलता है जो खोजने के लिए तत्पर होता है। अतः अबू बकर रज़ी. वे हैं जिन्हें रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र ज़बान से सिद्दीक़ की उपाधि प्रदान की गई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इब्ने ख़ुलदून कहते हैं कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रोग बढ़ गया और आप स. पर मूर्छता छा गई और नमाज़ का समय हुआ

तो आप स. ने फ़रमाया कि अबू बकर रज़ी. से कह दें कि वे लोगा को नमाज़ पढ़ा दें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन बातों की वसीय्यत करने के बाद फ़रमाया कि अबू बकर रज़ी. के दरवाज़े के अतिरिक्त मस्जिद में खुलने वाले सब दरवाज़े बन्द कर दो, क्यूँकि मैं समस्त सहाबियों में कल्याणकारो किसी को भी अबू बकर रज़ी. से बढ़ कर नहीं जानता। फिर इब्ने ख़ुलदून कहते हैं कि अल्लाह के सूक्ष्म उपकारों में से जो उसने आप रज़ी. पर फ़रमाए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निकटतम अवस्था की जो विशेषता आप रज़ी. को प्राप्त थी, वह यह थी कि आप रज़ी. उसी चारपाई पर उठाए गए जिस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उठाया गया था और आप रज़ी. की क़ब्र को भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र की भांति समानान्तर बनाया गया और सहाबियों ने आप रज़ी. की क़ब्र को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र क बिल्कुल निकट बनाया। आप रज़ी. ने जो अन्तिम बात फ़रमाई वह यह थी कि ऐ अल्लाह ! मुझे मुस्लिम होने की अवस्था में वफ़ात द तथा मुझे सालेह लोगों में शामिल फ़रमा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अबू बकर रज़ी. एक विशेष प्रतिभा सम्पन्न, अल्लाह वाले इंसान थे जिन्होंने अंधेरों के बाद इस्लाम के चेहरे को रोशनी प्रदान की, जिसने इस्लाम को छोड़ा उसके साथ आप रज़ी. ने मुक़ाबला किया, जिसने हक़ से इंकार किया आप रज़ी. ने उसके साथ युद्ध किया तथा जो इस्लाम के घर में दाख़िल हो गया तो उससे नर्मी एवं स्नेह पूर्ण व्यवहार किया। आप रज़ी. ने इस्लाम के प्रकाशन के लिए कठिनाईयां सहन कीं। आप रज़ी. प्रत्येक विरोधी के सामने डट कर खड़े हुए। आप रज़ी. ने प्रत्येक उस व्यक्ति को जिसने नबुव्वत का झूठा दावा किया, नष्ट कर दिया और अल्लाह तआला के लिए समस्त सम्बंधों को परे फेंक दिया। आप रज़ी. की समस्त ख़ूशियाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण में थीं। मैंने सिद्दीक़े अकबर रज़ी. को वास्तव में सिद्दीक़ पाया तथा अनुसंधान के अनुसार यह बात मुझ पर प्रकट हुई जब मैंने आप रज़ी. को समस्त इमामों का इमाम तथा दीन एवं उम्मत का चिराग़ पाया, तब मैंने आप रज़ी. की रकाब (घोड़े पर चढ़ने के लिए पाँव रखने का उपकरण) को मज़बूती से थाम लिया और आप रज़ी. की छाया में शरण ली और सच्चे लोगों से मुहब्बत करके अपने रब की रहमत प्राप्त करना चाही। अतः उस ख़ुदाए रहीम की दया मुझ पर हुई, शरण दी, मेरा समर्थन किया तथा मेरी तर्बियत की तथा मुझे प्रतिष्ठित लोगों में से बनाया तथा अपनी विशेष कृपा से उसने मुझे इस शताब्दी का मुजद्दिद और मसीह बनाया तथा मुझे उन लोगों में से बनाया जिन पर इलहाम होता है। मुझसे शोक को दूर किया और मुझे वह कुछ प्रदान किया जो दुनिया जहान में किसी अन्य को प्रदान नहीं किया और यह सब उस नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मी और उनके निकटवर्ती दिव्य पुरुषों की मुहब्बत के माध्यम से मुझे मिला। ऐ अल्लाह, तू अपने अफ़ज़लुर्रसुल और अपने ख़ातमुलअम्बिया और दुनिया के समस्त इंसानों से उत्तम अस्तित्व मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद और सलाम भेज। बख़ुदा हज़रत अबू बकर रज़ी. मक्का और मदीना के जीवन काल में भी तथा दोनों क़ब्रां में भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी हैं, इससे मेरा अभिप्रायः एक तो गुफा की क़ब्र है तथा दूसरी वह क़ब्र है जा मदीना में सर्वोत्तम कल्याणकारो अस्तित्व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र के साथ मिली हुई है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. का उदाहरण सदैव अपने सामने रखो। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस ज़माने पर विचार करो कि जब शत्रु कुरैश हर ओर से शरारत पर तुले हुए थे और उन्होंने आप स. की हत्या करने का आयोजन किया, वह ज़माना अत्यंत कठिन परीक्षा का ज़माना था उस समय हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. ने जो संगत का हक़ अदा किया उसका उदाहरण दुनिया में कहीं भी नहीं पाया जाता। यह शक्ति सच्चाई एवं ईमान के बिना कदाचित नहीं आ सकती। आज जितने तुम लोग बैठे हुए हो अपनी अपनी जगह सोचो कि यदि इस प्रकार की कोई कठिन परिस्थिति हम पर आ जाए तो कितने हैं जो साथ देने को तय्यार हों। मैं जानता हूँ कि यह बात सुन कर कुछ लोगों के हाथ पाँव ठंडे हो जाएँगे, उनको तुरन्त अपनी सम्पत्तियों तथा रिश्तेदारों का विचार आ जाएगा कि इनको छोड़ना पड़ेगा। कठिन घड़ियों में ही साथ देना सदैव सुदृढ़ ईमान वालों का काम होता है इस लिए जब तक इंसान क्रियात्मक रूप में ईमान को अपने अन्दर दाख़िल न करे, केवल एक कथन से कुछ नहीं बनता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. के आचरण पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शुभ आचरण का प्रभाव पड़ा हुआ था और आप रज़ी. का दिल विश्वास की ज्योति से परिपूर्ण था इस लिए वह दलेरी एवं सुदृढ़ता दिखलाई कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद उसका उदाहरण मिलना कठिन है। उनका जीवन इस्लाम का जीवन था। मैं सच कहता हूँ कि हज़रत अबू बकर रज़ी. इस्लाम के लिए दूसरे आदम हैं और मैं विश्वास करता हूँ कि यदि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद अबू बकर रज़ी. का वजूद न होता तो इस्लाम भी न होता। अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. का अति भव्य उपकार है कि उसने इस्लाम को पुनः स्थापित किया। आप रज़ी. नबुव्वत के गुणों के सर्वाधिक उत्तराधिकारी हैं और सर्वथा भलाई सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ः बनने के लिए सर्वोत्तम थे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में फ़रमाया कि ये थे हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी. जिन्होंने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में अपने आपको लीन कर दिया था। बदरी सहाबियों के वर्णन में यह अन्तिम वर्णन था जो अब पूरा हुआ, अल्लाह तआला हमें उन सहाबा रज़ी. के पद्चिन्हों पर चलने का सामर्थ्य प्रदान करे और जो स्तर उन्होंने क़ायम किए, हम भी उन स्तरों को क़ायम करने के प्रयास करने वाले हों।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652
अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131